समकालीन हिन्दी भाषा और साहित्य
विविध आयाम

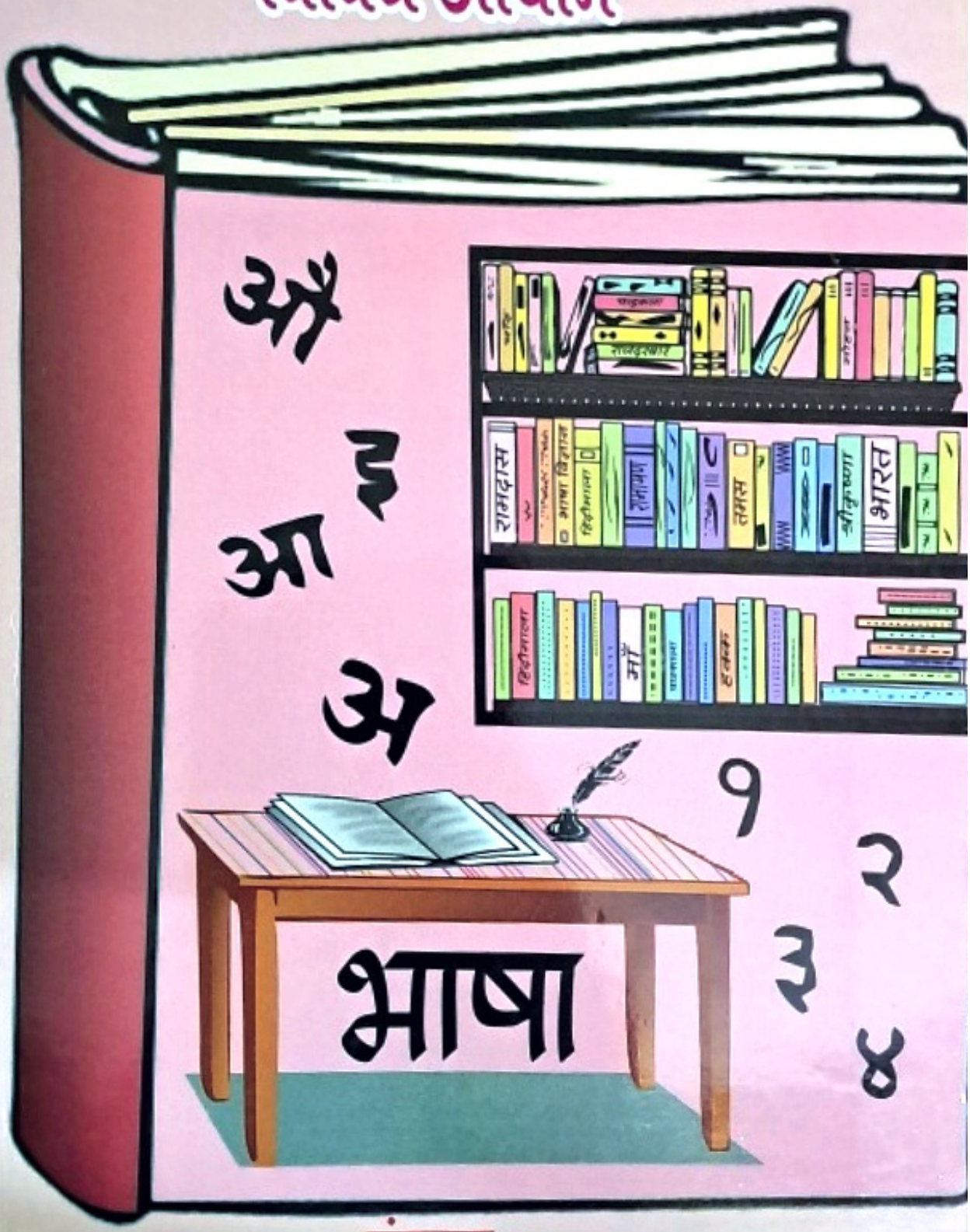

संपादक
डॉ. महानंदा पाटील

ISBN : 978-93-91458-72-0

Copyright © Reserved

प्रथम संस्करण : 2023

मूल्य : ₹ 1100/-

शीर्षक	Title
समकालीन हिन्दी भाषा और साहित्य : विविध आयाम	**Samkaleen Hindi Bhasha aur Sahitya : Vividh Aayam**
संपादक	Editor
डॉ. महानंदा पाटील	**Dr. Mahananda Patil**
प्रकाशक	Publisher
आर.के. पब्लिकेशन	**R. K. Publication**
1/12, पारस दूबे सोसायटी, ओवरी पाडा, एस.वी.रोड, दहिसर (पूर्व), मुम्बई - 400 068	1/12, Paras Dubey Society, Ovari Pada, S. V. Road, Dahisar-East, Mumbai - 400 068

Phone : 9022 521190 / 9821251190

E-mail : publicationrk@gmail.com

Website : www.rkpublication.in

अक्षर संयोजन : राजेन्द्र मिश्र

virar.mishra63@gmail.com

आवरण : सुनील निंबरे, विद्या उम्मर्जी

मुद्रक : सुमन ग्राफिक्स, मुम्बई - 400011

22. 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नालासोपारा' उपन्यास में चित्रित किन्नरों की स्थिति
- डॉ. श्रीकांत राठौड़ 145

23. स्त्री विमर्श
- डॉ. सर्वमंगला एस. कमतगी 151

24. हिन्दी साहित्य और जीवन मूल्य
- डॉ. प्रभु वि. उपासे 160

25. कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यासों में सशक्त नारी
- डॉ. चन्द्रकला सी. 166

26. मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में स्त्री विमर्श
- अफीफा फातिमा शेक
- डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन 170

27. मन्नू भंडारी के कथा साहित्य में नारी अस्मिता की खोज
- डॉ. महमद इसाक अहमद सन्नक्की 174

28. हिन्दी महिला साहित्यकारों के साहित्य में नारी विमर्श
- डॉ. मेहराज बेगम सैय्यद 179

29. कोरोना के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी कविताएं
- डॉ. सुमा टी. रोडनवर 183

30. हिन्दी कथा साहित्य में दस्तक देता वृद्ध विमर्श
- विक्रम अशोक पांडे 190

31. रमणिका गुप्ता के साहित्य में अभिव्यक्त दलित चेतना
- एफ. भी. नाय्कर 199

32. विश्व भाषा में हिन्दी का स्थान
- डॉ. दारा योगानंद 205

मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानियों में स्त्री विमर्श

- अफीफा फातिमा शेख (शोधार्थी)*
- डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन **

आधुनिक साहित्य में स्त्री विमर्श सर्वाधिक चर्चित विषय रहा है। आधुनिक लेखिकाएँ स्त्री के प्रति समाज की मानसिकता व रूढ़ियों पर आधारित पारिवारिक बंधनों से मुक्ति की आकांक्षा में प्रयत्नशील नजर आती हैं। हिन्दी साहित्य में भी स्त्री विमर्श कई धाराओं में विकसित हुआ और उसका मूल कारण लेखिकाओं का अपना अनुभव जगत और अपनी अलग-अलग सामाजिक स्थिति है। हिन्दी कथा लेखिकाओं ने अपने-अपने लेखन में नारी मन की अनेक समस्याओं को विषय बनाया है। हिन्दी में स्त्री विमर्श मात्र पूर्वाग्रहों या व्यक्तिगत विश्वासों तक ही सीमित नहीं है उसके और भी कुछ आयाम है, इन आयामों को तलाशने की कोशिश मनीषा कुलश्रेष्ठ ने अपनी कहानियों के माध्यम से किया है। मनीषा कुलश्रेष्ठ जी ने अपनी कहानियों में स्त्री विमर्श और स्त्री के वर्तमान दौर में शिक्षित होकर पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर अपने आप को स्थापित कर आत्मनिर्भर और स्वावलंबी बनना दिखाया है।

धर्म ने नारी पर सदियों से अपना शिकंजा जकड़ा हुआ है। आज की नारी शिक्षित होने के बावजूद उसका शोषण हो रहा है। धर्म ने विधवा नारियों का जीवन अभिशप्त बना दिया है। मनीषा कुलश्रेष्ठ जी ने अपनी कहानी 'रंग-रूप, रस-गंध' में विधवा स्त्री की दयनीय स्थिति का वर्णन किया है। कहानी का पात्र जया कहती है कि, "दस बरस की थी तब शादी हुई, तेरह पर गौना हुआ, पंद्रह लगते-लगते विधवा हो गयी।"[1] एक विधवा होने के नाते अपना शेष जीवन काशी में ईश्वर के नाम पर समर्पित कर देती है। परंतु अकेली जया को देखते ही पंडा रामबिलास चौबे जबरदस्ती करने लगता है। बेनुमाधव, पंडा के खिलाफ रपट लिखाने के लिए कहता है। उसकी बातें सुनकर जया कहती है, "गुंसाई, हमसे थाना-कचहरी नहीं होगा वैसे ही कोष्ट ही कोष्ट है इज्जत के नाम पर यह चिथड़े हैं।"[2] स्त्री

चाहे जीर्ण-हीन स्थिति में जीवन व्यतीत करें या महलों में, पुरुष की बुरी नजरों का शिकार होने से नहीं बच सकती।

भारतीय समाज परंपरागत रूढ़िवादी समाज है, जहाँ पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था होने के कारण सभी का निर्णायक पुरुष ही है। जहाँ स्त्री की इच्छा अनिच्छा कोई मायने नहीं रखती। इस प्रकार पितृसत्तात्मक समाज में आ रहे बदलाव को लेखिका ने स्पष्ट किया है। आज का परिवेश ही ऐसा है जिसमें नारी को घर परिवार या बाहरी क्षेत्र में जागृत रहने की आवश्यकता है। 'क्या यही वैराग्य' कहानी में पितृसत्तात्मक समाज में नारी की स्थिति को वर्णित किया है। नायिका सुमेधा युवा मुनी सागर चंद के कारण पति के संदेह के घेरे में आती है। मुनि सागर चंद सुमेधा के प्रति आकर्षित हो जाता है, जबकि सुमेधा को उसके प्रति कोई आकर्षण नहीं है। मुनि सागर चंद द्वारा स्वयं के आकर्षण को सबके समक्ष स्वीकारने पर सुमेधा को ही उसका पति पुखराज दोषी मानता है, उसके इस संदेह को लेखिका मनीषा ने इस तरह से व्यक्त किया है, "बहुत छिपाकर भी अपनी आवाज का कंपन छुपा न सके, तुम घर जाओ।"[3] 'लेट अस ग्रो टुगेदर' कहानी में नारी की स्थिति को पितृसत्तात्मक समाज के संदर्भ में परिभाषित किया है। लेखिका ने भारतीय स्त्रियों की पुरुष सत्तात्मक समाज की मानसिकता को इस प्रकार व्यक्त किया है, "भारतीय स्त्रियों की मानसिकता को धर्म व मर्यादा के पाठ से बांधने के लिए ही तो... यह सब सालों से होता आया है। अब यह हाल है कि भारतीय स्त्रियाँ प्राय: आधुनिक सोच अपना नहीं पाती है... और दैहिक के चलते कुंठित होकर रह जाती है।"[4] इससे स्पष्ट हो जाता है कि भारतीय स्त्रियों को धर्म, मर्यादा के नाम पर आज भी दबाया जाता है। यह नियम सिर्फ स्त्रियों के लिए है क्योंकि भारतीय समाज की मानसिकता आज भी पितृसत्तात्मक बनी हुई है। नारी की इच्छाओं, उसकी भावनाओं को धर्म, नैतिकता आदि नियमों के तहत दबाया जाता है।

व्यवस्था में फैली भ्रष्टता, अराजकता के कारण ना केवल आदिवासी लड़कियों को अपितु समाज में बहुत सी लड़कियों को यौन शोषण का शिकार होना पड़ता है। यदि कोई शिकायत करना चाहे या करे तो उसे

मरवा दिया जाता है या फिर पुलिस को खुश कर पीड़िता को और अधिक प्रताड़ित किया जाता है। 'अवक्षेप' कहानी में आदिवासी छात्राओं के यौन शोषण का वर्णन हुआ है। कहानी की पात्र बेनु, मनु से कहती है कि "पुलिस? वो हमारे यहाँ की दोनों कंजडिनें न, उनको ली जाके इंचारज पुलिस को खुस रखता है।"[5]

मनीषा कुलश्रेष्ठ की कहानी 'कठपुतलियाँ' में स्त्री की आर्थिक मजबूरी, बेमेल विवाह का वर्णन किया है। रामकिशन एवं सुगना कहानी के मुख्य पात्र है। जीवन में आए उतार-चढ़ाव कैसे पूरी जिंदगी को बदल डालते हैं और कैसे एक स्त्री को 'कठपुतली' की भांति नचाते है उसका वर्णन कहानी के माध्यम से किया गया है। तेरह बरस की सुगना की शादी तीस बरस का रामकिशन जो अपाहिज और विधुर दो बच्चों का बाप है उससे हो जाती है। यह बेमेल विवाह सुगुना के जीवन में तूफान ले आता है।

स्त्री को स्वतंत्र होने के लिए उसे सबसे पहले शिक्षित होना जरूरी है। मनीषा कुलश्रेष्ठ 'सियामीज' कहानी में स्त्री के अर्थ स्वतंत्रता का समर्थन करती है। क्योंकि जब तक स्त्री आर्थिक रूप से परतंत्र रहेगी तब तक उसको प्रताड़ित किया जाता रहेगा। 'सियामीज' कहानी की नायिका सिमोन कहती है, "नौकरी, आर्थिक सक्षमता ही एक परतंत्रता से निकलने का सबसे बड़ा माध्यम है। पर्स की आजादी।"[6]

निष्कर्ष : आधुनिक हिन्दी साहित्य जगत की उभरती युवा कथाकार 'मनीषा कुलश्रेष्ठ' का सृजनात्मक साहित्य हिन्दी की अनमोल निधि है। हिन्दी कथा साहित्य कि वे सशक्त लेखिका हैं। मनीषा जी ने अपनी कहानियों में स्त्री के हर तरह कि स्थिति और परिस्थिति का वर्णन किया है। किस प्रकार स्त्री सामाजिक, आर्थिक, मानसिक एवं राजनीतिक रूप से शोषित हो रही है उसका वर्णन बखूबी चित्रित किया हैं।

आज के कथा परिदृश्य को देखा जाए तो एक बात सामने आती है कि आज भी स्त्री यातना में जीवन यापन कर रही है। समस्या किसी भी प्रकार की हो लेखिका ने अपनी कहानियों में स्त्री के हर परिस्थिति का वर्णन हमारे सामने दर्पण की भांति प्रस्तुत किया हैं।

संदर्भ सूची :-

1. रंग-रूप, रस-गंध-1 मनीषा कुलश्रेष्ठ, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2022, पृष्ठ- 83
2. वही, पृष्ठ- 91
3. वही, पृष्ठ- 33
4. वही, पृष्ठ- 99
5. वही, पृष्ठ- 110
6. वही, पृष्ठ- 457

* शोधार्थी,
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टक्नोलॉजी,
एडवांस स्टडीज (विस्टास), पल्लवरम, चेन्नई

**असिस्टेंट प्रोफेसर एंड हेड,
वेल्स इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी,
एडवांस स्टडीज (विस्टास), पल्लवरम, चेन्नई

❖❋❖